SRIJAN 2021
सृजन SLIET'S ANNUAL MAGAZINE
69

हिन्दी

अनुभाग

दहेज एक व्यथा

आज फिर दिल से धड़कन जुदा हो गयी,
फिर एक बेटी विदा हो गयी।

आ गए लोग सज गयी कनात ,
फिर कहीं जाकर आधी रात को आयी बारात ।

होता गया बेटी के पिता के दिल का छोटा आकार,
फिर भी नम आँखों से किया बारात का सत्कार।

आज फिर दिल से धड़कन जुदा हो गयी,
फिर एक बेटी विदा हो गयी।

रात ढलती रही रश्में चलती रही ,
रस्मों के साथ मांगे भी बढ़ती रही।

जब हो गयी सारी कसमे तो आयी वो घड़ी ।
पिता ने खाली कर दी अपनी सारी झोली ,
तब जा कर उठी उसके बेटी की डोली।

आज फिर दिल से धड़कन जुदा हो गयी,
फिर एक बेटी विदा हो गयी।

गयी ससुराल हुआ वहाँ जश्न विशाल ,
किया सब किसी ने हुई तरीफ किसी की बेमिशाल ।

दिन खुशी के बीतते गए रात सच का होता गया गहरा,
तब सामने आये उनका असली चेहरा ।

उसे ताने मिलने लगे वो बहुत सतायी गयी ,
आखिर फिर एक बेटी दहेज की अग्नी में जलायी गयी ।

सब ने सच जाना नही कह दिया नियती हैं,
किसी ने यह नहीं जाना की उस मासूम पर क्या बीती हैं।

आज फिर दिल से धड़कन जुदा हो गयी,
फिर एक बेटी विदा हो गयी।

आखिर कब तक!!

Harsh Raj
GCT/21

रूबरू

हम अपने हसरत में तेरे जिस्म से रूबरू हुए
तुम जब बैठे सामने तो कितने गुफ़्तगू हुए !

बिखरे लब्ज़, बिखरे ख़्वाब अब संभले कहाँ
तेरे मयस्सर होने पर न जाने कैसे जुस्तज़ू हुए !

ये साज़िश - ए- मोहब्बत या कोई दिलकश - ए - फ़रेब
हुआ बद परवाना बदनाम उसके आरज़ू हुए!

हमने आँख भर देख लिया उन्हें बस इतना काफी है
अब क्या हुआ अगर बदले में बर्बाद हमारे सारे आबरू हुए!

सौरव कुमार सिन्हा
GCT/ 2130368

इंसानियत

मर गयी इंसानियत क्यूँकि मर गया इंसान,
इंसान के भेष में बस घूम रहा शैतान।

खोखला है जहान सारा क्यूँकि झूठा है इंसान,
मर गया इमान यहाँ पर क्यूँकि माया का हो रहा सम्मान।

मर रहे कमज़ोर यहां पर और पूछ रही नन्ही सी जान,
की इतना सब कुछ देख के भी क्यूँ चुप हैं भगवान?

और भगवान भी कह रहे कि मैं भी क्या करूँ!
जब मर गयी इंसानियत और मर गया इंसान।

-आर्यन दत्त गौर

क्योंकि

असफलता तब तक नहीं मिल सकती,
जब तक सफलता के मेरे इरादे मजबूत हैं,
क्योंकि,
UPSC मेरी चाहत नहीं ज़रूरत है।।

हारना तो मेरे DNA में है ही नहीं,
सिर्फ़ जीतना ही मेरी फितरत है,
क्योंकि,
UPSC मेरी चाहत नहीं ज़रूरत है।।

तू मुझे छोड़ कर चला गया तो क्या हुआ,
अब मुझे तुझसे हद से ज़्यादा नफरत है,
क्योंकि
UPSC मेरी चाहत नहीं ज़रूरत है।।

अब तो सोच लिया है सिविल सेवा में जाने की,
और इसी को करना अब साबित है,
क्योंकि,
UPSC मेरी चाहत नहीं ज़रूरत है।।

100 साल कुत्तों की तरह नहीं,
बस 1 साल शेर की तरह जीने की ज़िद्द है,
क्योंकि,
UPSC मेरी चाहत नहीं ज़रूरत है।।

अब तो सपना भी LBSNAA का है,
और किताबों से ही मोहब्बत है,
क्योंकि,
UPSC मेरी चाहत नहीं ज़रूरत है।।

अब कोई अपनी बातों से मुझे रोक ले,
इतनी कहाँ किसी की औकात है,
क्योंकि,
UPSC मेरी चाहत नहीं ज़रूरत है।।

अब बस इतना ही शौक है कि,
अपने नाम के आगे IAS लगाना है,
और माँ पापा को लाल बत्ती वाली गाड़ी में बैठाना है,
क्योंकि,
UPSC मेरी चाहत नहीं ज़रूरत है।।

सोनाली
GCT/20

"सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने के लिए युवा वर्ग आगे आएं"

वर्तमान समय में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में हम अग्रणी देशों में गिने जाते हैं परंतु यह हमारे लिए दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज भी दहेज प्रथा,जातिवाद,जैसी सामाजिक कुरीतियां पनप रही हैं ।हमारे समाज का स्वरूप यहाँ की सामाजिक कुरीतियों से बहुत अधिक ग्रसित हो चुका है।आज जीवन में अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियां हैं, जैसे- दहेज प्रथा, बाल-विवाह व अंधविश्वास इत्यादि।इससे सम्पूर्ण जीवन स्वरूप को मानो ग्रहण लग चुका है व राष्ट्र के विकास हेतु अवरोधक हैं ।

दहेज प्रथा- सामाजिक जीवन की कुरीतियों में दहेज प्रथा सबसे व्यापक कुरीति है। ऐसा अनुमान है कि भारत में प्रतिवर्ष लगभग ९००० महिलाओं को दहेज के कारण आत्महत्या हेतु विवश होना पड़ता है।सरकार द्वारा दहेज निरोधक अधिनियम १९६१ अवश्य ही पास कर दिया गया है, परन्तु उक्त कानून में इतने दोष हैं कि उन्हें दूर किये बिना इसका लाभ सम्भव नहीं है। दहेज निरोधक अधिनियम व सरकार के अनेक प्रयत्नों के बावजूद नव-विवाहित स्त्रियों द्वारा की जाने वाली आत्म- हत्याओं में अधिकांश संख्या २०-३० आयु की होती है।स्वाभाविक है जिसे आत्महत्या कहा जाता है, वे साधारणतया दहेज को लेकर की जाने वाली वाली सुनियोजित हत्याएँ ही होती है।

बाल-विवाह- सामाजिक जीवन में व्याप्त कुरुतिया में बाल-विवाह भी एक भयंकर कुरीति है। यों तो १८ वर्ष से कम उम्र की लड़की और २१ वर्ष से कम उम्र के लड़के का विवाह भारतीय कानून में एक दंडनीय अपराध घोषित किया जा चुका है। फिर भी इसके उल्लंघन का रीति मानवता को चुनौती देने से बाज नहीं आते।बाल ववाह कर देने से स्वास्थ्य, मानसिक विकास और खुशहाल जीवन पर असर पड़ता है, व पूरे समाज में पिछड़ापन आ जाता है।राष्ट्रीय अपराध रेकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के हालिया आंकड़ों के अनुसार 2020 में बाल विवाह के मामलों में उसके पिछले साल की तुलना में करीब 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

अंधविश्वास-सामाजिक जीवन में अंधविश्वास का घनान्धकार खूब फैला हुआ है। मंत्र-तंत्र-यंत्र आदि के प्रति लोगों का खूब अंधविश्वास है, जिनके कारण जनमानस में अकर्मण्यता घर कर जाती है और वे भाग्यवादी हो जाते हैं और देश की प्रगति में बाधक बनते हैं।

युवा वर्ग देश व समाज की रीढ़ होती है। युवा देश का वर्तमान हैं, तो भूतकाल और भविष्य के सेतु भी हैं। वास्तव में आज का शिक्षित युवा वर्ग देश के लिए कुछ करना चाहती है, तो उसे इन सारी सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध तत्परता के साथ आवाज़ उठाने की जरूरत है। समाज का प्रत्येक वर्ग इससे निजात पाना चाहता है।ऐसे में यदि शिक्षित युवा वर्ग इन बुराईयों के खिलाफ संगठित होकर आगे आता है तो यह बात देश व समाज के हित में होगी।

इस हेतु युवा वर्ग को समाज में समय समय पर उपरोक्त बुराईयों के खिलाफ वातावरण बनाने की जरूरत है,जिसके परिणाम स्वरूप समाज के लोगों के अन्दर इन सारी बातों की जागरूकता होने लगेगी। जैसे-जैसे जागरूकता बढेगी, वैसे-वैसे ये कुरीतियां कम होते जाएंगे।अतः आज के युवा वर्ग को इस हेतु आगे आना चाहिए, तभी सामाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों से मुक्ति की कल्पना की जा सकती है।

अभिषेक कुमार
GCT/20

भारतीय

आईये हिंदू मुस्लिम से पहले एक भारतीय बन जाते हैं ।

आइये दिवाली और ईद साथ में मनाते है,
आप हमारी चालीसा पढ़िये हम आपकी आज़ान गाते है।

आईये हिंदू मुस्लिम से पहले एक भारतीय बन जाते हैं ।

अपने देश के प्रति जो ज़िम्मेदारियां हैं आओ उन्हें निभाते हैं
कमियां बहुत गिन ली, आओ अब बदलाव लाते हैं ।

ब्रिटिश इंडिया वाला समय बहुत हुआ,
अब वापस सोने की चिड़िया बन जाते हैं।

आइए देश द्रोहियों और नफरत फैलाने वालों को साथ में सज़ा दिलवाते हैं ।
आईए हिंदू मुस्लिम से पहले एक भारतीय बन जाते हैं ।

आइए जो गलती १९९० कश्मीर में हुई उसे अब सुधारते हैं
गलत को गलत और सही को सही कह कर एक नया भारत बनाते है।

आईये हिंदू मुस्लिम से पहले एक भारतीय बन जाते हैं ।

आइए गर्व से देखते हुए अपना लहराता हुआ तिरंगा,
अब अपना राष्ट्रीय गान गाते हैं ।

आईये हिंदू मुस्लिम से पहले एक भारतीय बन जाते हैं ।

- आर्यन दत्त गौर

शिव का बदला

चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !
चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे,

चन्द्रमा है प्रज्वलित,
मृत्यु काल से रहित,

"त्रयम्बकं" कहे उसे,
सृष्टि है उससे रचित,

तांडव की ताल से
अपने एक बाल से,

कर दिया रचित
तुमने काल "वीर भद्र"

कर दिया रचित
तुमने काल "वीर भद्र"

चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !
चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !

वीर काल बन चुका है,
कुंड बन गयी चिता है,

काल की मृदंग देख,
दक्ष घर में जा छुपा है,

माता सती के हाल से,
शिव की आंख लाल से,

कर दिया रचित
तुमने काल "वीरभद्र"

कर दिया रचित
तुमने काल "वीरभद्र"

चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !
चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !

वीर काल बन चुका है,
कुंड बन गयी चिता है,

काल की मृदंग देख,
दक्ष घर में जा छुपा है,

माता सती के हाल से,
शिव की आंख लाल से,

कर दिया रचित
तुमने काल "वीरभद्र"

कर दिया रचित
तुमने काल "वीरभद्र"

चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !
चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !

देवता भी भय से कांपे,
शिव का ही नाम जापे,

मुंडो की पहन माला,
राक्षसो के शीष काटे,

तोड़ने अभिमान को,
प्रजापति के काल को,

कर दिया रचित
तुमने काल "वीर भद्र",
कर दिया रचित
तुमने काल "वीर भद्र",

चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !
चिदानंदउमानाथवीरभद्रम भजे !

उदय शर्मा

बदलापन

क्या बदलापन अपने अंदर देख रहे हो,
क्या उसको तुम सबके अंदर देख रहे हो?

जान तुम्हारे ही आंखों की ये आतिश है,
जिसको आप हमारे अंदर देख रहे हो,

बतलाया वो अब घर पर मौजूद नहीं है,
और मियां तुम घर के अंदर देख रहे हो,

मेरी ग़ज़ले लोगों की किरदार नुमाइश है,
तुम किसको ग़ज़लों के अंदर देख रहे हो?

यार खुदा में मन्दिर मस्जिद का मसला नहीं,
मसला है तुम किसके अंदर देख रहे हो?

उदय शर्मा
GEC/19

ख्वाइश

ज़िन्दगी ने ना जाने कितने हम पर साज़िश किए,
बे-अदब से हमने भी कुछ फ़रमाइश किए ।
अधूरे से है अब भी ख्वाब हमारे,
तो कुछ अब भी है अधूरे ख्वाइश लिए।।

गिरिधर कुमार
GFT/21

शहर

ये छत से दिखता शहर बड़ा रंगीला है,
बड़ी जल्दी में है शायद कुछ ढूंढ़ने निकला है !

सब हड़बड़ी में है,
किसी के इंतज़ार को यहाँ किसको वक़्त मिला है !

कोई गाड़ी, कोई रिक्शा, कोई पैदल ही,
अपनी मंज़िल को ढूंढने निकला है!

भीड़ का हिस्सा होकर भीड़ को कोसते हैं,
खुद ना मानें है किसी की, पर दूसरों को रोकते हैं,

चलती गाड़ी से कचरा फ़ेंक कर कहते है,
यार यहां के लोग ना, सड़कें गन्दी रखते है,

अंदर से खोखला पर बाहर से चमकीला है,
अपनी छत पर चढ़के तो देखो,
ये शहर कितना रंगीला है !

अपना शहर कितना रंगीला है !

मुदिता सिन्हा
GCT/20

बुद्धि का अनुसरण

इन्द्रिय के साधन से इन्द्रियाँ अधिक जरुरी हैं। टी. वी. से अधिक हमारी आँखे, संगीत से अधिक जरुरी हैं हमारे कान तथा स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों से जरूरी है हमारी जिह्वा। लेकिन कुछ लोग ऐसा सोचते है कि इंद्रिय को सुख देने वाली वस्तुएं इन्द्रिय से अधिक जरुरी है। उन्हें मालूम है कि अत्यधिक टी. वी. देखना आँखों के लिए अच्छा नहीं है फिर भी हम परवाह नहीं करते और लम्बे समय तक टी. वी. देखते रहते। हम आहार को शरीर से ज्यादा महत्व देते है। इसलिए बुद्धिमान वही है जो इन्द्रिय की तुलना में मन की ओर ज्यादा ध्यान देता है। यदि मन का ध्यान नहीं रखा और इन्द्रिय सुख के साधन पर ही ध्यान रहा तो अवसाद में जाना आम बात है। बुद्धिमता मन से परे है। यदि केवल मन के अनुसार चला जाए तो हमारी स्थिति डाँवाडोल हो जायेगी जीवन में हमारी कोई प्रतिबद्धता नहीं रहेगी और हम दुःख में समा जाएंगे। पर अनुशाशन मन की इस प्रकृति को मिटा सकती है। बुद्धि मन से अधिक जरुरी है क्योकि यह ज्ञान की मदद से निर्णय लेती है। इसलिए बुद्धि का अनुसरण करना चाहिए मन का नहीं।

निष्ठा रानी
GCS/20

तेरा रूठना

तेरा रूठना इस दिल पे क्या बैठ गया,
मैंने हर बार तुझसे पूछा और फिर भी चुप बैठ गया
जब बोला एक लफ्ज़ तूने मेरे सामने
मैं अचानक अपनी नींद से उठ के बैठ गया
मांगना तो चाहता था बहुत कुछ तुझसे
पर जब भीड़ देखी तेरे सामने मैं फिर बैठ गया
शायद भूलने जैसे चीज ही नहीं है तू
वरना हर बार उठाने के बाद भी मैं क्यों बैठ गया

अनिकेत मिहिर

"कुछ"

कुछ गलतियों से ज़िन्दगी में मिलती हैं उदासियां,
सोचता रहता फिर, क्यों हो जाती हैं हमसे ही ऐसी गुस्ताखियां ।
ये जो कुछ पल मिले हैं हमें
इसे कुछ अपने तरीके से जीना सिखा दे ऐ खुदा
पता तो हमें भी कुछ यूं है,
आखरी पलों में ना लाओगे कोई पालकी
और न ही मिलेगी हमें यहां से कोई बैसाखिया ।

होंगी अपनी भी ज़िन्दगी औरों की तरह खास
खुशनसीब रहेगा वो पल जब कोई तो होगा अपने पास।
कुछ राज़ दफन है दिलों में जिससे उभरते ऐसे कुछ अहसास
कभी न कभी, कुछ अनोखी बनेगी अपनी भी कुछ कहानियां,
उम्मीदों की साए से लिपटी है ,
की जाएगी एक दिन, कुछ अपनी भी तन्हाइयां ,
कुछ अपनी भी तन्हाइयां ।

ये तो रीत ही चली आ रही ,
ज़िन्दगी तो दिखाते हैं कुछ अच्छे
तो कभी कुछ बुरे दिन ।
और कुछ लोग अगर साथ न हो, तो मुश्किल हो जाते हैं,
पल गुजरने में इनके बिन ।
कुछ लोगों के लिए अकेले जीना हो जाती है इनकी आदतें,
बना लेते हैं ये मुमकिन।

अगर कुछ हमारे मंज़रे भी मिले अधूरे, रह जाये इनमें भी कुछ खामियां ,
तो संभल के उठाएंगे अपनी भी ज़िन्दगी की कुछ जिम्मेदारियां,
हर किसी के मतलब से मुक्त रहेगी अपनी भी कुछ परेशानियां,
और जहां सच मे कुछ मतलब निकले, बनाएंगे अपनी भी एक ऐसी जिन्दगानियां,
बनाएंगे अपनी भी एक ऐसी जिन्दगानियां ।।

गिरिधर कुमार

मेरा देश

ना मेरा देश कभी गुलाम था,
ना मेरा देश गुलाम है
यह तो खून है मेरे जवान का,
जिसने इसे सींचा है, और
उस जवान को मेरा सलाम है॥

ना मेरा देश कभी गुलाम था,
ना मेरा देश गुलाम है

यह तो बलिदान है इस देश की मां का,

जिसने अपना चिराग खोया, और
उस मां को मेरा सलाम है ॥

ना मेरा देश कभी गुलाम था,
ना मेरा देश गुलाम है

यह तो खून है मेरे जवान का,
जिसने इसे सींचा है, और
उस जवान को मेरा सलाम है॥

जदवयांश राज
CTV/ 20

शब्द यें अखंड हो

शब्द यें अखंड हो,
प्रचंड हो, बुलंद हो की -
ज्ञान की न अंत हो,
अंत भी अनंत हो।

और छात्र ही यथार्थ हो,
यथार्थ में निःस्वार्थ हो।
ज्ञान से समाज में
उद्धार हो। प्रकाश हो।

शब्द यें अखंड हो,
प्रचंड हो, बुलंद हो।
शब्द यें अखंड हो,
प्रचंड हो, बुलंद हो की।
धर्म पे न जंग हो,

एकता की उमंग हो।
और धर्म का यह अर्थ हो,
की एक ही मनुष्य
और एक ही परमार्थ हो।

मनुष्य का मनुष्य से
एक ही सम्बंध हो।
शब्द यें अखंड हो,
प्रचंड हो, बुलंद हो।

शुभम रावत
GEC/20

हाल- ए- दिल

दास्ताँ-ऐ-उलफ़त में कट रही है ज़िन्दगी आज-कल,
दिलों की रूस्वाई में गुमनाम हूँ आज-कल।
जी लेते हैं गुज़रे लम्हों के साये में,
बस यही जीने का सहारा है आज-कल।

तन्हापन से नाता है आज-कल,
खुद के सपनों में लापता है आज-कल,
फ़ुर्सत नहीं मुझे उनकी यादों से,
मशरूफ़ रहता हूँ खुद में ही आज-कल।

कभी अश्क बहाया करते थे वो,
कभी खुशी से खिलखिलाया करते थे वो।
यूँ तो बहुत से सपने थे उनमें,
पूरी करने की कोशिशें बरक़रार रखते थे वो।

कुछ यूँ मिले थे हमसे अजनबी बनकर,
कुछ यूँ आए थे ज़िन्दगी में फरिश्ते बनकर,
कुछ यूँ रुख़्सत हुए फिर से अजनबी बनकर।
अब पलकों तले बह जाते हैं आंसू बनकर।

एक बेरूख़ी का आलम है ज़िन्दगी में,
बस तेरे ही तलब की आस है ज़िन्दगी में,
न जाने कब और कितने मोड़ आएंगे ज़िन्दगी में,
बस अब तुम से रुख़्सत लेता हूं,
क्या पता कोई और हमसफ़र मिल जाए ज़िन्दगी में।

शुभम रावत
GEC/20

माँ

मैं मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा सब गया ....
लेकिन भगवान को देखा जब घर आया,
बचपन में माँ की गोद में बड़े आराम से सोता था,
बड़ा होकर बिस्तर देखा तो डर गया।
उंगली पकड़ कर चलना जिसने सिखाया था ,
आज उसे अकेले चलने का आदत हो गया,
अपने आंचल में छुपा रखा था माँ ने,
बाहर निकलते ही मैं बिखर गया।

अंधेरों से जब जब टकराया उसे चीर कर निकला,
रोशनी माँ के साथ चली मैं छितर गया,
पूरी दुनिया का स्वाद चखकर जब घर वापस गया,
माँ ने अपने हाथों से खिलाया और पेट भर गया।
सच है माँ की कहानी ही अनमोल है,
बच्चों की आवाज़ से उसे महसूस कर ले,
उससे बड़ा भगवान कौन है !

शुभम रावत
GEC/20

कोशिश कर

कोशिश कर हल निकलेगा,

आज नहीं तो कल निकलेगा।

अर्जुन सा लक्ष्य रख निशाना लगा,

मरूस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।

मेहनत कर पौधों को पानी दे

बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे, फौलाद को भी बल निकलेगा।

सीने में उम्मीदों को जिंदा रख,

समन्दर में भी गंगाजल निकलेगा। कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की
जो कुछ थमा थमा है, चल निकलेगा।

कोशिश कर निकलेगा हल निकलेगा आज नहीं तो कल निकलेगा।

शुभंकर कुमार